SOCIOLOGY

B.A. III, Paper V, Social Thought

# AUGUST COMTE

August Comte एक महान फ्रांसीसी विचारक था। उसका जन्म France के एक धार्मिक परिवार में हुआ। और उसने अपनी प्रारंभिक शिक्षा भी France में ही प्राप्त की। French revolution एक दशक के पश्चात उसका जन्म हुआ। सामाजिक विचारों के इतिहास में August Comte का नाम समाजशास्त्र के जन्मदाता के रूप में जाना जाता है। Comte एक उदारवादी विचारक था। Comte के विचार 18वीं शताब्दी के सुधारवादी आन्दोलन से प्रभावित थे। Comte के विचारों को प्रभावित करने वाले विभिन्न बौद्धिक आन्दोलन उल्लेखनीय हैं। Comte ने Kant, Bacon तथा Newton की रचनाओं का भी अध्ययन किया था उसकी सब से अधिक घनिष्ठता Saint Simon से रही है। आरम्भ से ही वह अत्याधिक प्रतिभाशाली तथा बुद्धिमान व्यक्ति था। सत्ता एवं नियन्त्रण का वह बचपन से ही विरोधी था। अपनी असाधारण क्षमता एवं स्मृति के कारण अपनी School के काल से ही वह Philosopher प्रसिद्ध हो गया था।

1838 में Comte ने अपनी पुस्तक Positive Philosophy में सर्व प्रथम समाजशास्त्र को एक व्यवस्थित विज्ञान के रूप में प्रस्तुत किया। इसी कार्य उसे समाजशास्त्र के जनक अथवा पिता के रूप में जाना जाता है। Comte ने ही सर्व प्रथम समाजशास्त्र एवं सामाजिक विचारों के योग का निर्माण किया। विज्ञानों के वर्गीकरण का नवीन सिद्धान्त

स्थापित किया एवं उनके पारस्परिक सम्बन्धों पर प्रकाश डाला। चिन्तन की तीन अवस्था को उजागर सर्वप्रथम उसी ने किया। समाजशास्त्र के क्षेत्र में उसके महत्वपूर्ण योगदान दिये हैं। उसने जिन महत्वपूर्ण सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है उन दो में से एक उसका सबसे प्रसिद्ध सिद्धान्त तीन स्तरों के नियम के रूप में जाना जाता है। इसे समाजशास्त्र के क्षेत्र में Comte द्वारा प्रस्तुत एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में जाना जाता है। यह सिद्धान्त उसने Charles Darwin द्वारा प्रस्तुत "theory of organic evolution" सिद्धान्त से प्रभावित होकर प्रस्तुत की।

इस सिद्धान्त में उसने मनुष्यों स्वतन्त्र समाजों एवं उसकी अवस्थाओं की चर्चा की है। यह सिद्धान्त Comte के समाजशास्त्र का आधार है। इस सिद्धान्त को Comte ने 1822 ई० में अपनी 24 वर्ष की आयु ही में स्थापित कर दिया था।

Law of three stages की चर्चा करते हुए Comte ने विचार दिया है कि "हमारी प्रत्येक प्रमुख विचारधारायें, हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा एक के बाद एक तीन विभिन्न सैद्धान्तिक अवस्थाओं से होकर गुजरती है। धर्मशास्त्रीय या काल्पनिक तत्व वाद यथार्थिक अथवा अमूर्त तथा वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षात्मक

(1) Theological or Fictitious Stage।

Scanned by CamScanner

यह अवस्था आदिवासियों एवं बच्चों में प्रकृति एवं विभिन्न आश्चर्यजनक प्राकृतिक घटनाओं के प्रति पाई जाती है। इस stage में मनुष्य प्रत्येक घटना का कारण पारलौकिक अथवा काल्पनिक समझता है। आदिम मनुष्य यह समझते हैं कि कोई भी घटना पारलौकिक शक्ति की कृत्य प्रक्रिया का परिणाम होती है। जब वह किसी बात को समझने में अक्षम होते हैं तो इस प्रकार की कल्पनाओं का सहारा लेते हैं। Comte के अनुसार यह अवस्था भी तीन उप अवस्थाओं से होकर गुजरती है। जैसे

(a) Fetishism (b) Polytheism (c) Monotheism

(a) इस प्रकृति की प्रत्येक वस्तुओं में जीवन की कल्पना की गयी है। इस विचार के अनुसार भौतिक वस्तुओं में भी चेतना होती है। आदिवासियों में प्रत्येक निर्जीव वस्तु में अलौकिक शक्ति का निवास समझा जाता है।

(b) दूसरी स्थिति बहुदेववाद की है जिसके अन्तर्गत विभिन्न देवताओं को उनके विभिन्न कार्यों के अनुसार कुछ निश्चित वर्गों में विभाजित कर दिया गया है।

(c) इस अवस्था में ईश्वर केवल एक ही होता है और सभी अन्य उसके द्वारा उत्पन्न किये हुए होते हैं। यह अवस्था धर्मशास्त्रीय चिन्तन की अवस्था का अन्तिम चरण है।

(2) Metaphysical Stage: यह अवस्था धर्मशास्त्रीय और प्रत्यक्षवादी अवस्था के बीच उनको जोड़ने वाली एक कड़ी का कार्य करती है। मस्तिष्क को

विकास के साथ साथ मनुष्य की तर्क शक्ति भी बढ़ती है। विकास की इस अवस्था में मनुष्य ने सोचा कि प्रत्येक घटना के पीछे ईश्वर प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित नहीं होता है और यह अमूर्त स्वरूप में हर जगह मौजूद है। इस प्रकार प्रथम अवस्था में ईश्वर की कल्पना मूर्त रूप में थी इस अवस्था में ईश्वर की कल्पना अमूर्त रूप में की जाती है।

(3) Scientific or Positive stage:
चिन्तन की अन्तिम अवस्था वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षवादी अवस्था है। प्रत्यक्षवाद संसार की ओर परिवर्तन एवं उसका विश्लेषण करने की पूर्ण बौद्धिक प्रणाली है। इस अवस्था में Comte ने बताया कि मस्तिष्क को तथ्यों के अवलोकन एवं वर्गीकरण की ओर केन्द्रित करना चाहिये और उसे काल्पनिक, धार्मिक अथवा अलौकिक शक्ति पर कुछ भी विश्वास नहीं करना चाहिये। इसका सम्बन्ध वास्तविक दिखने वाली दुनिया से है।

Comte का विचार है कि इस तीन अवस्थाओं का सिद्धान्त व्यक्ति, समाज एवं बौद्धिक तथा सामाजिक जीवन पर भी लागू होता है अर्थात प्रत्येक समाज तथा व्यक्ति इन तीनों अवस्थाओं से होकर गुजरता है।

— x —

Scanned by CamScanner